Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LII (52), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मालवा क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत, भौगोलिक विशिष्टता और पर्यटन रूझान का राजस्थान और गुजरात के साथ तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. रामबिलास मरकाम*

* सहायक प्राध्यापक (इतिहास) उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – यह शोध-पत्र मालवा क्षेत्र (मध्यप्रदेश) की सांस्कृतिक विरासत, भौगोलिक विशिष्टताओं और पर्यटन प्रवृत्तियों का राजस्थान एवं गुजरात से तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। तीनों क्षेत्रों में ऐतिहासिक स्मारक, धार्मिक स्थल, लोककला, स्थापत्य परंपराएँ और सांस्कृतिक पहचान प्रमुख भूमिका निभाती हैं। अध्ययन के अंतर्गत साहित्य समीक्षा, क्षेत्रीय तुलनात्मक मॉडल तथा पर्यटन नीतियों का मूल्यांकन किया गया है। परिणाम बताते हैं कि जहाँ राजस्थान विरासत आधारित पर्यटन में अग्रणी हैं, वहीं गुजरात आधुनिक पर्यटन अवसंरचना में आगे हैं। मालवा क्षेत्र (उज्जैन, मांडू, महेश्वर, ओंकारेश्वर और इंदौर) में विशिष्ट सांस्कृतिक धरोहर होने के बावजूद पर्यटन प्रचार, प्रबंधन और संरचनात्मक विकास की कमी है। अध्ययन सुझाता है कि नीति सुधार, डिजिटल प्रमोशन, सतत पर्यटन मॉडल और समुदाय आधारित प्रबंधन द्वारा मालवा को एक प्रमुख पर्यटन गंतव्य के रूप में विकसित किया जा सकता हैं। साथ ही आगंतुक रूझान और क्षेत्रीय विकास संकेतकों में समानताओं और विशमताओं पर प्रकाश डालता है। पर्यटकों के आगमन सांस्कृतिक स्थलों के घनत्व, आर्थिक प्रभाव और अवसंरचना सूचकांकों की विस्तृत तुलना प्रस्तुत करके, यह शोधपत्र मालवा की अप्रयुक्त क्षमता पर प्रकाश डालता है और सतत पर्यटन विकास के लिए सुझाव प्रस्तुत करता है।

शब्द कुंजी – मालवा क्षेत्र, रास्थान पर्यटन, गुजरात पर्यटन, सांस्कृतिक विरासत, भौगोलिक विशिष्टता, तुलनात्मक अध्ययन, विरासत संरक्षण नीतियाँ, तीर्थ पर्यटन, पर्यटन रूझान।

प्रस्तावना – आधुनिक युग में पर्यटन उद्योग सम्पूर्ण विश्व में तेजी से विकसित हो रहा है। जैव विविधता, वनों, नदियों, पर्वतों, स्मारकों और संस्कृति के क्षेत्र में भारत की अदभुत विशेषताओं को देखते हुए इस उद्योग में उत्तरोत्तर वृद्धि करने की आत्यधिक संभावनाएं है। मध्य प्रदेश का मालवा क्षेत्र एक महत्पूर्ण सांस्कृतिक भू-भाग, प्राचीन काल से ही अपनी विशिष्ट लोक-संस्कृति, स्थापत्य धरोहर, पारंपरिक कला-शिल्प और अनोखे भौगोलिक स्वरूप के लिए प्रसिद्ध रहा हैं। इसके पश्चिम में राजस्थान, और गुजरात राज्य स्थित है। शाजापुर, मंदसौर, नीमच, रतलाम, खरगोन, खण्डवा, झाबुआ, अलीराजपुर, बड़वानी, धार, देवास, राजगढ़, उज्जैन, इंदौर आदि जिले एवं मांडू, महेश्वर, ओंकारेश्वर जैसे ऐतिहासिक शहरों के साथ मालवा एक सांस्कृतिक गलियारे के रूप में कार्य करता है जो उत्तरी, पश्चिमी और मध्य भारत को जोड़ता है, साथ ही भारतीय सभ्यता के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देता हैं। दूसरी ओर, राजस्थान और गुजरात दोनों ही पड़ोसी राज्य अपनी सांस्कृतिक पर्यटन नीतियों, संरक्षण दृष्टिकोण और प्रभावी ब्रांडिग रणनीतियों के कारण राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को बड़े पैमाने पर आकर्षित करते हैं। राजस्थान और गुजरात के विकसित मॉडल को आधार बनाते हुए मालवा की संभावनाओं और चुनौतियों का समृद्ध सांस्कृतिक वैभव अपेक्षित पहचान नहीं प्राप्त कर सका तथा किस प्रकार की नीति से सामुदायिक भागीदारी, तकनीक और अवसंरचना विकास के माध्यम से इसे एक प्रमुख सांस्कृतिक पर्यटन गंतव्य बनाया जा सकता है। यह तुलनात्मक दृष्टिकोण न केवल क्षेत्रीय विकास की दिशा में उपयोगी है, बल्कि भारत के व्यापक सांस्कृतिक पर्यटन परिदृष्य को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

मालवा की सांस्कृतिक विरासत

ऐतिहासिक और स्थापत्य विरासत– मालवा प्राचीन सभ्यता का केंद्र रहा है, जिस पर मौर्य, गुप्त, परमार (विशेष रूप से राजा भोज), मालवा सल्तनत, मुगल, मराठों और बाद में होल्करों ने शासन किया। इस स्तरित इतिहास ने विविध वास्तुशिल्प रूपों का निर्माण किया है।

उज्जैन: एक हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान का प्रमुख केंद्र है, यहाँ महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग, काल भैरव मंदिर, सांदीपनि आश्रम आदि प्रसिद्ध हैं।

मांडू (धार): एक किलाबंद मध्ययुगीन शहर जो अफगान और मालवा सल्तनत वास्तुकला जैसे जहाज महल, हिंडोला महल, होशंगशाह का मकबरा और महलनुमा परिसरों के लिए जाना जाता है।

महेश्वर: नर्मदा नदी पर स्थित एक आध्यात्मिक शहर जो अहिल्याबाई होल्कर घाट वास्तुकला और माहेश्वरी हथकरघा साड़ियों के लिए प्रसिद्ध है।

ओंकारेश्वर: 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक, जो नर्मदा नदी पर ॐ के आकार के द्वीप पर स्थित है।

ये सांस्कृतिक संपत्तियां मालवा को एक संभावित विरासत पर्यटन केंद्र के रूप में स्थापित करती है, हालांकि गुजरात के संगठित विरासत सर्किट और राजस्थान के अच्छी तरह से संरक्षित शाही स्मारकों की तुलना

में इनके संरक्षण के लिए अधिक मजबूत प्रयासों की आवश्यकता है।

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत– मालवा अपनी जीवंत अमूर्त परंपराओं के लिए जाना जाता है:

मेले और त्यौहार: उज्जैन का सिंहस्थ कुंभ, रंग पंचमी, मालवा उत्सव, कार्तिक मेला, गैर नृत्य।

संगीत एवं प्रदर्शन कलाएं: मांडा गायन, गवलन लोकगीत, आदिवासी भिलाला नृत्य (भगोरिया पर्व)। शिल्प और हथकरघा: माहेश्वरी बुनाई, पारंपरिक धातु शिल्प, पत्थर पर नक्काशी आदि।

मालवा की भौगोलिक विशिष्टता: मालवा का पठार, दक्कन ट्रैप का एक भाग है, यहाँ की उपजाउ काली मिटटी कपास की खेती के लिए उपयोगी है। 300 से 600 मीटर तक उँचा पठारी क्षेत्र सुखद जलवायु प्रदान करता है। यह नदी, घाटियाँ और वनों से भरा लहरदार इलाका है। धार, झाबुआ, अलीराजपुर जिले (आदिवासी क्षेत्र) घने जंगल वाले क्षेत्र हैं।

जलवायु और पर्यावरणीय विशेषताएं– मालवा की ऊष्ण कटिबंधीय जलवायु, पड़ोसी मैदानों की तुलना मे ठंडी होती है। यहां शिप्रा, चंबल, नर्मदा आदि बड़ी नदियाँ है। ये विशेषताएं पर्यटन पैटर्न का आकार देने में मदद करती है, विशेष रूप से मौसमी तीर्थयात्रा (उज्जैन), पहाड़ी पर्यटन (मॉडू) और नदी–आधारित पर्यटन (महेश्वर)।

गुजरात गरवा, पटोला, बुनाई, कच्छी कढ़ाई और राजस्थान घूमर, पाबूजी की फड़ की तुलना में, मालवा की अमूर्त विरासत समृद्ध है, लेकिन इसका व्यावसायिक प्रचार कम है। राजस्थान के शुष्क रेगिस्तान और पहाड़ी किले एवं गुजरात के तटीय मैदान, दलदली भूमि (कच्छ) और अर्ध–शुष्क क्षेत्रों से मालवा की भौगोलिक स्थिति मालवा को अलग रखती है।

पर्यटन का विकास एवं रूझान – मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र विरासत, प्राकृतिक सौंदर्य, वन संपदा और धार्मिक पर्यटन का अनोखा संगम है। पर्यटन एक ऐसा क्षेत्र है, जो अर्थव्यवस्था, संस्कृति और समाज तीनों का परस्पर जोड़ता है। मालवा क्षेत्र में मांडू हेरिटेज सर्किट, उज्जैन आध्यात्मिक सर्किट, इंदौर–देवास सांस्कृतिक सर्किट, महेश्वर हथकरघा और घाट विरासत सर्किट आदि प्रमुख सर्क्रिट हैं।

धार्मिक पर्यटन– नदियॉ और घाट, धार्मिक पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। राजस्थान की भीषण गर्मियों के विपरीत, पठारी जलवायु वर्ष भर यात्रा के लिये अनुकूल है। मांडू की किलेबंद पहाड़ियाँ अद्वितीय वास्तुशिल्प परिदृष्य प्रस्तुत करती हैं। वन एवं जनजातीय क्षेत्र पारिस्थितिकी पर्यटन और सांस्कृतिक–जातीय पर्यटन की संभावनाएं प्रदान करते हैं। मालवा के तीर्थस्थल– महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग उज्जैन, ओमकारेश्वर ज्यातिर्लिंग, नर्मदा परिक्रमा महेश्वर, मांडू की सूफी दरगाह। इससे घरेलू पर्यटकों का रूझान बड़ा है, विशेषकर सिंहस्थ के दौरान, जो लाखों लोगों को आकर्षित करता है।

शहरी पर्यटन– वाणिज्यिक राजधानी इंदौर खाद्य पर्यटन, खरीदारी और सांस्कृतिक कार्यक्रम, व्यावसायिक पर्यटन, सम्मेलन और प्रदर्शनियों आदि में योगदान देता है। इंदौर ने सातवीं बार स्वच्छ भारत सर्वेक्षण में पहला स्थान हासिल किया है, जो इसे एक स्वच्छ और स्मार्ट पर्यटन गंतव्य बनाता है। हालाँकि, गुजरात के स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, द्वारका, गिर, सोमनाथ और राजस्थान के जयपुर, जोधपुर, उदयपुर की तुलना में मालवा की ब्रांडिग कम प्रभावशाली है।

योजनाएं– देश में पर्यटकों की संख्या बढ़ाने के लिए संस्कृति एवं पर्यटन विभाग एवं सरकार द्वारा कई योजनाएं एवं उपाय किये गये हैं, अपनी धरोहर अपनी पहचान, पर्यटन पर्व, देखो अपना देश स्वदेश दर्शन, आवास अवसंरचना प्रोत्साहन योजना, हेरिटेज होटल योजना, एक्सपोर्ट प्रोमोशन केपीटल गुडस स्कीम, सर्विस एक्सपोर्टस फ्राम इंडिया स्कीम, निर्यात गृह योजना, पीएमश्री पर्यटन हेलीकॉप्टर सेवा, एसएएससीआई योजना आदि। प्रमुख पर्यटन सर्किटों में पर्यटन सुविधाओं का विस्तार, होटलों विशेषत: बजट होटलों का विस्तार, वायु परिवहन क्षमता का विस्तार, देश की मूर्त व अमूर्त विरासतों को यूनेस्को की सूची में शामिल होना, चीन, उत्तर पूर्व एषिया एवं दक्षिण पूर्व एशिया जैसे उभरते बाजारों पर फोकस आदि शामिल है। मध्यप्रदेश सरकार ने भी पर्यटन के क्षेत्र में कइ महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं जैस– सरसी आइलैंड रिसॉर्ट प्रारंभ, रीजनल टूरिज्म कॉन्क्लेव योजना, विलेज टूरिज्म योजना, फ्री एनआरआई ट्रैवल हेल्प पोर्टल लॉन्च, पर्यटन हेलीकॉप्टर सेवा आदि प्रयासों से प्रदेश में पर्यटकों का रूझान बड़ा है। इसके लिए प्रदेश को 'बेस्ट टूरिज्म स्टेट ऑफ द ईयर' अवार्डर्स से सम्मानित किया गया है।

पर्यटन विकास में चुनौतियाँ–ग्रामीण विरासत स्थलों तक सीमित परिवहन संपर्क, संरक्षण और व्याख्या केंद्रों में कम निवेश, गुजरात और राजस्थान की तुलना में कमजोर डिजिटल प्रचार, विरासत स्मारकों के पास अपर्याप्त आवास समूह, विरासत संरक्षण नीतियों का धीमा कार्यान्वयन।

तुल्नात्मक संदर्भ– गुजरात नीति–संचालित पर्यटन (विरासत पर्यटन नीति, ब्रांडिग, पीपीपी परियोजनाएं) में उत्कृष्ट है। राजस्थान की मजबूत शाही विरासत, रेगिस्तानी परिदृष्य और वैश्विक विपणन से लाभ मिलता है। मालवा मध्य प्रदेश में प्रचुर विरासत है, लेकिन खंडित संरक्षण प्रयासों के कारण इसकी क्षमता का पूरा उपयोग नहीं हा पाया है। मध्यप्रदेश में वर्ष 2024 में लगभग 13.41 करोड़ पर्यटकों का आगमन हुआ, वर्ष 2023 की तुलना में लगभग 19. प्रतिशत की वृद्धि हुई है। मालवा के धार्मिक पर्यटन के क्षेत्र में उज्जैन में लगभग 7.32 करोड़ पर्यटक पहुँचे, वर्ष 2023 की तुलना में 39 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और शहरी पर्यटन के क्षेत्र में भी इंदौर में लगभग 1.02 करोड पर्यटक पहँचे। परन्तु राजस्थान और गुजरात राज्यों की तुलना में विदेशी पर्यटकों के मामले मे तो मध्यप्रदेश पिछड़ा हुआ है, घरेलू पर्यटन में भी गुजरात और राजस्थान से पीछे मध्यप्रदेश 9वें नम्बर पर रहा है।

शोध पद्धति– प्रस्तुत शोध मूलत: द्वितीयक समंकों पर आधारित है, जिसमें द्वितीयक डेटा– एएसआई रिपोर्ट, पर्यटन मंत्रालय डेटा एवं साहित्य समीक्षा– इतिहास, संस्कृति और पर्यटन से संबंधित शोध–पत्र, पुस्तकें एवं समाचार पत्रों आदि का उपयोग कर जानकारी एकत्र कर विवेचना एवं परिणाम प्रस्तुत किये गये हैं।

निष्कर्ष– इस तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मालवा क्षेत्र अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं, भौगोलिक विविधता और ऐतिहासिक धरोहरों के बावजूद राजस्थान और गुजरात की तुलना में पर्यटन आकर्षण एवं प्रचार–प्रसार में पीछे है। मालवा में तीर्थयात्राओं का मजबूत घरेलू आधार है, किन्तु विदेशी और उच्च खर्च पर्यटन के क्षेत्रों में प्रतिस्पर्धात्मक कमी है। राजस्थान का सशक्त विरासत संरक्षण ढांचा और गुजरात का आधुनिक पर्यटन अवसंरचना मॉडल मालवा के लिए अनुकरणीय हैं। अध्ययन दर्शाता है कि यदि मालवा में विरासत संरक्षण नीतियाँ, समुदाय आधारित पर्यटन, डिजिटल प्रमोशन और आधारभूत सुविधाओं को सुदृढ किया जाए, तो यह क्षेत्र मध्य

भारत का प्रमुख सांस्कृतिक एवं धार्मिक पर्यटन केन्द्र बन सकता है। इसके लिए प्रदेश स्तर पर प्रयास भी किये जा रहे हैं। क्षेत्रीय सहयोग और एकीकृत नीति दृष्टिकोण इसकी भविष्यगत सफलता की कुंजी है। इसलिए तत्काल आवश्यक है कि संरक्षण-नीति और पर्यटन-प्रबंधन को संयोजित करके मालवा की पहचान को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मानचित्र पर सशक्त किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. त्यागी, प्रशान्त (2015), 'भारतीय पर्यटन- विकास व विस्तार की अपार संभावनाएं' अतुल्य भारत पत्रिका पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार।
2. कुमारी, अजिता (2019), 'पर्यटन का नया आयाम: ग्रामीण पर्यटन' इण्डियन जरनल आफ रिसर्च, 8(9)
3. गुप्ता, शीलचन्द्र (2015), 'आर्थिक सुधार एवं मध्यप्रदेश में पर्यटन का विकास' शोध दर्शन रिसर्च जर्नल, 1(3)
4. पाण्डेय, आनंद कुमार एण्ड श्रीमती अर्चना (2016), 'सामान्य अध्ययन' मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
5. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (2019-2024), वार्षिक रिपोर्ट।
6. मध्यप्रदेश सरकार (2022), मध्यप्रदेश टूरिज्म पॉलिसी।
7. वरे, डॉ.एस.एल., 'मध्यप्रदेश का इतिहास एवं संस्कृति' कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल।
8. जोशी, श्याम सुन्दर (2020), 'राजस्थान दर्शन' प्राइम पब्लिकेशन, भीलवाड़ा।
9. रंजन, डॉ. मनीष, 'भारतीय कला एवं संस्कृति' प्रभात एग्जाम, नई दिल्ली।
10. सागर, अरूण 'भारत के पर्यटन स्थल'।
11. कपूर, विमल कुमार धार्मिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन स्थल डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
12. पंजाब केसरी समाचार पत्र।
13. दैनिक-भास्कर समाचार पत्र।

****